❍ 24 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *किसी के अवगुण तो नहीं देखे ?*

➢➢ *गॉडली स्टूडेंट लाइफ की ख़ुशी में रहे ?*

➢➢ *लगन की अग्नि द्वारा एक दीप से अनेक दीप जलाए ?*

➢➢ *समय के महत्व को जाना ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अपनी हर कमेन्द्रिय की शक्ति को इशारा करो तो इशारे से ही जैसे चाहो वैसे चला सको। ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब फिर प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे।* हर कर्मेन्द्रिय 'जी हजूर' 'जी हाजिर' करती हुई चले। आप राज्य अधिकारियों का सदा स्वागत अर्थात् सलाम करती रहे तब कर्मातीत बन सकेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ"*

〰✧ सदा अपने को सर्व शक्तियों से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें अनुभव करते हो? *बाप ने सर्वशक्तियों का खजाना वर्से में दे दिया। तो सर्वशक्तियाँ अपना वर्सा अर्थात् खजाना हैं। अपना खजाना साथ रहता है ना। बाप ने दिया बच्चों का हो गया।*

〰✧ *तो जो चीज अपनी होती है वह स्वत: याद रहती है। वह जो भी चीजें होती हैं, वह विनाशी होती हैं और यह वर्सा वा शक्तियाँ अविनाशी हैं। आज वर्सा मिला, कल समाप्त हो जाए, ऐसा नहीं। आज खजाने हैं, कल कोई जला दे, कोई लूट ले - ऐसा खजाना नहीं है।*

〰✧ *जितना खर्चो उतना बढ़ने वाला है। जितना ज्ञान का खजाना बांटो उतना ही बढ़ता रहेगा। सर्व साधन भी स्वत: ही प्राप्त होते रहेंगे। तो सदा के लिए वर्से के अधिकारी बन गये - यह खुशी रहती है ना। वर्सा भी कितना श्रेष्ठ है! कोई अप्राप्ति नहीं, सर्व प्राप्तियाँ हैं।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *सारे दिन में भिन-भिन्न स्थितियों का अनुभव करो।* कभी फरिश्ते स्थिति का, तो कभी लाइट हाऊस, माइट हाऊस स्थिति का, कभी प्यार स्वरूप स्थिति अर्थात लवलीन स्थिति के आसन पर बैठ जाओ और अनुभव करते रहो।

〰✧ इतना अनुभवी बन जाओ, *बस संकल्प किया फरिश्ता, सेकण्ड में स्थिति हो जाओ।* ऐसे नहीं, मेहनत करनी पडे। सोचते रहो मैं फरिश्ता हूँ और बार-बार नीचे आ जाओ। ऐसी प्रैक्टिस है?
संकल्प किया और अनुभव हुआ।

〰✧ जैसे स्थूल में जहाँ चाहते हो बैठ जाते हो ना। सोचा और बैठा कि युद्ध करनी पडती है - बैठें या न बैठूँ? तो यह मन-बुद्धि की बैठक भी ऐसी इजी होनी चाहिए। *जब चाहो तब टिक जाओ। इसको कहा जाता है - राजयोगी राजा।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *बापदादा ने देखा कि मिटाने और समाने की शक्ति कम है* मिटाते भी हैं, उल्टा देखना, सुनना, सोचना, बीता हुआ भी मिटाते हैं लेकिन जैसे आप कहते हो ना कि एक है कान्सेस दूसरा है सब कान्सेस। मिटाते हैं लेकिन मन की प्लेट कहो, स्लेट कहो, कागज कहो, कुछ भी कहो, पूरा नहीं मिटाते। *क्यों नहीं मिटा सकते? कारण है- समाने की शक्ति पावरफुल नहीं है। समय अनुसार समा भी लेते लेकिन फिर समय पर निकल आता। इसलिए जो चार शब्द (शुभचिन्तक, शुभचिन्तन, शुभ भावना, शुभ श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप) बापदादा ने सुनाये, वह सदा नहीं चलते।* अगर मानों बिल्कुल मन की प्लेट कहो, कागज कहो, पूरा नहीं मिटा तो पूरा साफ न होने के बदले अगर आप और अच्छा लिखने भी चाहो तो स्पष्ट होगा? अर्थात् सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ धारण करने चाहो तो सदा और फुल परसेन्ट में होगा? बिल्कुल क्लीन भी हो, क्लीयर भी हो तब यह शक्तियाँ सहज कार्य में लगा सकते हैं। कारण यही है - मैजारिटी की स्लेट क्लीयर और क्लीन नहीं है। *थोड़ा-थोड़ा भी बीती बातें या बीती चलन, व्यर्थ बातें व व्यर्थ चाल-चलन सूक्ष्म रूप में समाई रहती हैं तो फिर समय पर साकार रूप में आ जाती हैं। तो समय अनुसार पहले चेक करो, अपने को चेक करना दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना।* क्योंकि दूसरे को चेक करना सहज लगता है, अपने को चेक करना मुश्किल लगता है। *तो चेक करना हमारे मन की प्लेट व्यर्थ से और बीती से बिल्कुल साफ है? सबसे सूक्ष्म रूप है - बायब्रेशन के रूप में रह जाता है। फरिश्ता अर्थात् बिल्कुल क्लीन और क्लीयर। समाने की शक्ति निगेटिव को भी पॉजिटिव रूप में परिवर्तन कर समाओ। निगेटिव ही नहीं समा दो, पॉजिटिव में चेंज करके समाओ तब नई सदी में नवीनता आयेगी।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- खुद नॉलेजफुल बनकर, औरो को भी बनाना"*

➳ _ ➳ शांति स्तम्भ में मीठे बाबा से आती.... शीतल और शांत किरणों तले बेठी हुई मै आत्मा... मीठे बाबा से पाये अखूट खजानो का आकलन करती हूँ... और *उसकी बदौलत पायी अथाह अमीरी को निहारती हूँ... तो पाती हूँ, कि इस पूरे विश्व में मै आत्मा... सबसे अमीर हूँ, क्योकि मेरे पास ईश्वरीय खानों का अम्बार है.*.. दुखो की गरीबी अब ओझल हो गयी है... और मेरे चारो तरफ सुख ही सुख बिखरा है... मीठे बाबा ने मुझे धनवान्, ज्ञानवान बनाकर, मुझे बेहद का समझदार बना दिया है...कभी खुद को भी न जानने वाली मै आत्मा... *मीठे बाबा की छत्रछाया में पूरे ब्रह्माण्ड की जानकारी...बुद्धि जेब में रख कर घूम रही हूँ... कितना प्यारा यह इत्तफाक है.*.. और मीठे बाबा की यह कितनी प्यारी जादूगरी है...

❇ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को नई दुनिया का मालिक बनाने के लिए ज्ञान धन से सजाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सच्चे पिता को पाकर, सच्चे ज्ञान से भरपूर होकर... सदा खुशियो में खिलखिलाते रहो... मीठे बाबा के मददगार बनकर, नई दुनिया के स्थापना में सहयोग के हाथ बढ़ाओ... और *अपने भाग्य में चार चाँद लगाओ... इस कदर ज्ञान रत्नों से भर जाओ... सदा यह रत्न छलकते रहे*..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में गहरे डूबकर अतीन्द्रिय सुख पाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे मनमीत बाबा... *आपने मेरे जीवन में आकर, जीवन को अनोखी अदा से सजाया है... आज जीवन मूल्यों से सजा हुआ... ईश्वरीय प्रेम से छलक रहा है.*.. और हर दिल को आपका दीवाना बना रहा है... मै आत्मा आपसे पायी ज्ञान धन की दौलत को सारे विश्व में बांटकर सब्को मालामाल बनाती जा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने प्यार में सतयुग दुनिया का सरताज बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे.... मीठे बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर जो त्रिकालदर्शी बनाया है... वही बेहद की नजर हर दिल को भी दिलाओ... *सबको आप समान ईश्वरीय धन से अमीर बनाओ... और मीठे बाबा से असीम खुशियो की जागीर दिलवाकर... सबके दिल आँगन में सच्चे सुखो की फुलवारी सजाओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से असीम प्यार को पाकर, पूरे विश्व को पर उंडेलते हुए कहती हूँ :-* "सच्चे साथी मेरे बाबा... मै आत्मा सुखो से सजी, नई दुनिया को बनाने में ईश्वर पिता की सहयोगी बनूंगी... भला यह मेने कब सोचा था... आज इस महान भाग्य को पाने वाली... *सबसे ज्यादा भाग्यवान बन गयी हूँ... और इन मीठी खुशियो और मीठे भाग्य को हर आत्मा की तकदीर बना रही हूँ.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से सजाकर, देवताई श्रंगार से निखारते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता से पाये अखूट खजानो को अमूल्य ज्ञान रत्नों को... पूरे विश्व पर लुटाने वाले विश्व कल्याणकारी बनकर मुस्कराओ,... आप समान मीठा प्यारा भाग्य, हर आत्मा का भी सजाओ... *मीठे बाबा से पायी सच्ची खुशियो और आनन्द से हर दिल को अभिभूत करो..*. सबको दुखो के जंगल से निकालकर सुखो की बगिया में सदा का आराम दिलाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से अथाह प्यार पाकर, रहम की भावना से भरकर... हर दिल को सच्चे सुख दिलाकर कहती हूँ :-* "मेरे प्यारे प्यारे बाबा...

मै आत्मा आपके साये में प्रेम स्वरूप बनकर मुस्करा रही हूँ... हर दिल का भला चाहने वाली... *ईश्वरीय ज्ञान रत्नों से सजाने वाली... मा सुखदाता बन गयी हूँ... सबकों प्यारे बाबा से मिलवाने वाली रहनुमा बन गयी हूँ.*.."मीठे बाबा से अथाह वरदानों से सजकर मै आत्मा... इस साकारी देह में आ गयी....

———————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप समान बहुत मीठा बनना है*"

➳ _ ➳ अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर को धारण किये मैं फ़रिशता सूक्ष्म वतन में अव्यक्त बापदादा के सामने बैठा उनकी मीठी दृष्टि से स्वयं को निहाल कर रहा हूँ। बापदादा की मीठी दृष्टि मेरे रोम - रोम में मिठास घोल रही है और मुझे आप समान मीठा बना रही है। *बाबा की दृष्टि में मेरे लिए समाया असीम स्नेह, प्रेम के मीठे झरने के रूप में मुझ पर निरन्तर प्रवाहित हो रहा है*। बड़े स्नेह से निहारते हुए बाबा मेरी बुद्धि रूपी झोली को वरदानों से भरपूर कर रहें हैं। मुझे आप समान बहुत बहुत मीठा बना कर, सबको मीठी दृष्टि से निहाल कर, सबका कल्याण करने का वरदान दे रहें हैं।

➳ _ ➳ मेरे नैन अपने अति मीठे बापदादा को एकटक निहार रहें हैं। एक पल के लिए भी मेरी आँखें उनके ऊपर से नही हटना चाहती। ऐसा लगता है कि उनसे मिलने की जो प्यास थी उस जन्म - जन्म की प्यास को मेरी ये आंखे आज ही बुझा लेना चाहती हैं। *बाबा के नयनो में अथाह स्नेह का सागर लहराता हुआ मैं स्पष्ट देख रही हूँ और उस स्नेह की गहराई में मैं डूबती जा रही हूँ*। बाबा के नयनो में समा कर, बाबा को निहारते हुए, बाबा के वरदानी हस्तों को मैं अपने सिर के ऊपर अनुभव कर रही हूँ। बाबा के वरदानी हस्तों से बाबा की सर्वशक्तियाँ, गुण और खजाने मुझ फ़रिश्ते में समा रहें हैं और मुझे सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व खजानों से सम्पन्न बना रहे हैं।

➳ _ ➳ अब मैं सामने से अपनी अति मीठी मम्मा को आते हुए देख रही हूँ जो बाबा के पास आ कर बैठ गई है और बहुत मीठी दृष्टि से मुझे निहारती जा रही हैं। *मम्मा के मस्तक से निकल रही लाइट सीधी मेरे मस्तक पर पड़ रही है और मुझमे असीम शक्ति का संचार कर रही है*। मम्मा का मुस्कराता हुआ चेहरा और मीठी मुस्कान मुझे दिल की गहराई तक स्पर्श कर रही है। ऐसा लग रहा है जैसे अपनी मीठी मुस्कान और मीठी दृष्टि से मम्मा अपनी सारी मिठास मेरे अंदर प्रवाहित कर मुझे आप समान अति मीठा बना रही है। *अपने हाथ से इशारा करते हुए मम्मा मुझे अपने पास बुला रही है। अपनी गोद में बिठा कर अपने हाथों से मुझे मीठी टोली खिला रही हैं*।

➳ _ ➳ मम्मा के हाथों की मीठी टोली, और बापदादा की अति मीठी दृष्टि से मेरे अंदर देह अभिमान के कारण जो कड़वाहट आ गई थी वो अब बिल्कुल समाप्त हो गई है और मैं स्वयं को विशेष रूहानी स्नेह और प्यार की मिठास से भरपूर अनुभव कर रहा हूँ। बाप समान बहुत - बहुत मीठा बन कर अब मैं साकारी दुनिया में वापिस लौट रहा हूँ। *बापदादा के साथ कम्बाइंड हो कर मैं सारे विश्व में चक्कर लगा रहा हूँ और अपने रूहानी स्नेह के वायब्रेशन सारे विश्व मे चारों और फैला रहा हूँ*। मैं देख रहा हूँ रूहानी स्नेह के वायब्रेशन से लोंगो के हृदय परिवर्तन हो रहें हैं। जिस हृदय में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या - द्वेष और नफरत के भाव थे, वो भाव आपसी स्नेह में परिवर्तित हो रहें हैं। *सभी एक दो को मीठी दृष्टि से देख रहें हैं। ऐसा लग रहा है जैसे नफरत की दुनिया स्नेह की एक सुंदर दुनिया बन गई है*।

➳ _ ➳ सभी आत्माओं के एक दूसरे के प्रति अति मीठे व्यवहार को देखता हुआ, प्रसन्नचित मुद्रा में मैं फ़रिशता अब साकारी दुनिया मे अपने साकारी तन में आ कर विराजमान हो जाता हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में अब मैं स्थित हूँ और अपने मीठे बाबा के प्यार की मिठास से स्वयं को भरपूर करके, उस मिठास से भरपूर वायब्रेशन, अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं को देते हुए, उनके जीवन को भी मैं मिठास से भर रही हूँ*। मेरी मीठी दृष्टि पा कर सभी आत्माओं की दृष्टि, वृति भी परिवर्तित हो गई है। सभी एक दो को सच्चा रूहानी स्नेह और प्यार दे कर, एक दो के जीवन में खुशियां भर रहें हैं

➳ _ ➳ *सबको आत्मा भाई - भाई की मीठी दृष्टि से देखते हुए, अपने मधुर व्यवहार और मीठे बोल से सबको संतुष्ट करने वाली सन्तुष्ट मणि आत्मा बन मैं अपने मीठे बाबा और सर्व आत्माओं की दुआयों की पात्र आत्मा बन गई हूँ*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं लगन की अग्नि द्वारा एक दीप से अनेक दीप जलाकर सच्ची दीपावली मनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं कुल दीपक आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा समय के महत्व को जान लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा सर्व प्राप्तियों के खजाने से सम्पन्न हूँ ।*
✺ *मैं सर्व प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि *वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो।* बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेले-पन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है। इसलिए *बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अन्डरलाइन करा रहे हैं - कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना।*

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। *होते हुए दूर रहना - उसे कहेंगे वैराग्य।* लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नालेज और *विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो।* जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं

से वह भी परेशान हैं। *वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ।* आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

✺ *ड्रिल :- "साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाना"*

➳ _ ➳ नुमाशाम योग के समय हद के सेवाओं से, दुनियावी बातों से *मन और बुद्धि को कुछ समय के लिये हटाते हुये स्वयं को अशरीरी फरिश्ता स्वरूप में देख रही हूँ... सफेद प्रकाश के पवित्र उज्जवल पोशाक में स्वयं को निहार रही हूँ... कुछ ही समय में स्वयं को सूक्ष्मवतन में विराजित पाती हूँ...* ब्रह्माबाबा के सम्मुख जाकर बैठ जाती हूँ... बाबा की मीठी मुस्कान देख मैं फरिश्ता सुख का अनुभव कर रही हूँ... *बाबा की नज़रों से नज़र मिलाकर मैं आत्मा भाव विभोर हो रही हूँ...*

➳ _ ➳ बाबा की नज़रों ने बुद्धि में ज्ञान बिंदुओं की झड़ी लगा दी है... विश्व कल्याण की इस यज्ञ शाला में साधनों के आधार पर साधना की परिधि बडी ही सीमित है... *सम्पूर्ण विश्व की सेवा के लिए, बेहद की सेवा के लिए मन और बुद्धि में वैराग वृत्ति को इमर्ज कर साधना में लीन होने की बात बाबा की नजरों से जैसे समझ आ गई...* बाबा की नज़रों ने ज्ञान की इतनी कठिन बात को सहजता से समझा दिया है...

➳ _ ➳ देह और देह की जगत के समस्त सुख सुविधा से सम्पन्न साधनों के होते हुए भी मन और बुद्धि में वैराग वृत्ति का अनुभव, विश्व के अनेक आत्माओं के शांति व सुख की शुभभावना शुभकामना के लिए बेहद सेवा को सहज आधार प्रदान कर रहा है... *चाहे जितनी साधनों का प्रयोग हो साधना के लिए वैराग वृत्ति ही मुख्य आधार हो* - बाबा की यह शिक्षा बहुत ही सरल तरीके से मुझ आत्मा की मन और बुद्धि में समाती जा रही है... *और मैं आत्मा अपने फरिश्ता स्वरुप में स्थित हो सेकंड में बेहद के वैराग का अनुभव कर रही हूँ...*

➳ _ ➳ *ब्रह्मा बाबा समान लक्ष्य सदा नज़रों के सामने रख बाबा की ज्ञान ऊर्जा को स्वीकार करती मैं फरिश्ता परमात्मा पिता को प्रत्यक्ष करने के लिए तैयार हो रही हूँ...* स्वयं को बेहद के वैराग वृत्ति से भरपूर कर अन्य आत्माओं की हद की वृत्ति को बेहद में परिवर्तन करने की सेवा देने की अनुप्रेरणा ले रही हूँ...

➳ _ ➳ अपने बेहद की वृत्ति द्वारा सम्पूर्ण वायुमंडल को बेहद की वैराग वृत्ति से भरपूर करती मैं *अशरीरी आत्मा फरिश्ता स्वरूप में चारों दिशाओं की चक्कर लगाती हुई अनेक आत्माओं को शांति व शक्ति का अनुभव कराते हुए नीचे आ जाती हूँ... शांति सुख शक्ति की सकारात्मक ऊर्जा को वायुमंडल में भरपूर करती मैं आत्मा अशरीरी स्वरूप में हद की समस्त बातों से न्यारा सा अनुभव कर रही हूँ...* स्वयं में बेहद के वैराग की गंभीरता को गहराई में भरते हुए अनुभव कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔